RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 29 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 22 दिसम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

कोहरे से घिर चुके नगर-कस्बे, सर्द हवाओं से ठिठुरन, पहाड़ों में बर्फीले कणों की चारद बिछी

कार्यालय प्रतिनिधि

पौष माह अपने परम्परागत रूप में उतर आया है। देर-सवेर फुहार, बर्फ, कोहरा पौष में होता है, सो कोहरे में नगर-कस्बे घिरे हैं। सर्द हवाओं से ठिठुरन है और जन-जीवन अस्त-व्यस्त। सड़क, रेल, हवाई यात्राओं की रफ्तार धीमी हुई है। उच्चहिमालय में बर्फ की ढांप के साथ पहाड़ों में बर्फीले कणों की चादर बिछी है। तराई-भाबर में अधितम तापमान 23. 4 डिग्री सेल्सियर और न्यूनतम तापमान 5.2 डिग्री रहा।

उत्तरकाशी में कड़ाके की ठण्ड के चलते जिला प्रशासन ने सीमावर्ती क्षेत्रों में अलाव जलाने का प्रबन्ध किया है। सीमा से लगे गावं सुक्की, झाला, धांतरी, चौरंगीखाल, भटवाड़ी आदि क्षेत्रों में राहगीरों, मजदूरों एवं असहाय लोगों को अलांव से राहत मिली है। शीतलहर से ठिठुर रहे चम्पावत जिले में जिला प्रशासन ने राहगीरों के लिये अलाव जलवाए हैं। इसी प्रकार अन्य जिलों में भी लोगों से सावधान रहने को कहा गया है।

तापमान में गिरावट से उत्तर भारत मे ठिठुरने लगे

नई दिल्ली। उत्तर भारत में सक्रिय पश्चिमी विक्षोभ और जेट स्ट्रीम यानी वायुमण्डल की ऊपरी परत में चलने वाली तेज हवाओं से मौसम का मिजाज बदल चुका है। हिमालयी राज्यों में बारिश और बर्फबारी के कारण मैदानी इलाकों में तापमान में तीव्र गिरावट दर्ज है। कड़ाके की ठण्ड के साथ लगातार कोहरा बढने लगा है और कई स्थानों पर न्यूनतम तापमान सामान्य से नीचे पहुँच गया है। देश के महानगरों में कोहरे की चादर से अन्धकोप होने लगा है।

हिमालयी क्षेत्र से आ रही सर्द हवाओं का असर

लखनऊ। हिमालयी क्षेत्र से आ रही बर्फीली हवा के कारण उत्तर प्रदेश में पारा और गिर गया है। कई जगहों पर न्यूनतम तापमान तो सामान्य से नीचे चला गया है। मौसम विभाग के अनुसार अब हवा की रफ्तार भी धीमी रहेगी। लखनऊ, कानपुर और आसपास के क्षेत्रों में सर्दी का असर बढ़ चुका है। पहाड़ों में बर्फबारी कराने वाले पश्चिमी विक्षोभ के आगे का प्रभाव दिखने लगा है। आगरा, अलीगढ़, मेरठ, मुज्जफरनगर, सहारनपुर में घना कोहरे के साथ गलन वाली सर्दी होने लगी है।

भारत के मीलपत्थर

सत्यकाम जाबाल और उसका वह सरल संवाद

सूर्यकान्त बाली

उद्दालक आरुणि पर लिखते वक्त हम विवेचन कर रहे थे कि कैसे अठाहर दिनों तक चले भयानक महाभारत संग्राम का असर देश की चिन्तन प्रणाली पर पड़ा। आज सत्यकाम जाबाल पर लिखते वक्त हम देखना यह चाहते है। कि महाभारत काल में सामाजिक रिश्तों की हालत क्या थी और युद्ध के बाद उसमें क्या अन्तर पड़ा। अगली बार जब हम श्वेतकेतु पर लिखेंगे तो इसी थीम को आगे बढ़ाना जरूरी होगा, यह देखने के लिए कि श्वेतकेतु जैसे विचारकों को कैसे नए सामाजिक नियम बनाने को विवश होना पड़ा।

सत्यकाम जाबाल के बारे में जानना हो तो आपको दान्दोग्योपनिषद के चौथे अध्याय के चौथे खण्ड का गोता लगाना पड़ेगा, हालांकि उसके दार्शनिक विचारों का विवेचन इसी अध्याय के अगले खण्डों में भी है। सत्काम जाबाल गुरुकुल जाने लायक हुआ तो उसकी गुरु हरिद्रुमत गौतम के पास जाकर पढ़ने की इच्छा हुई। वहाँ जाने पर गुरु पूछेंगे कि किस गोत्र के हो, पिता का नाम क्या है, तो वह क्या जवाब देगा? वह अपनी माँ के पास गया और पूछा- 'सत्यकामो ह जाबालो जबाला मातरमामन्त्रयांचक्रे ब्रह्मचर्य भवति विवत्स्यामि किंगोत्रोह-मस्मीति' माँ मैं गुरु के पास जाकर ब्रह्मचारी के रूप में रहना चाहता हूँ, बताओ तो मेरा गोत्र क्या है?

गोत्र पूछने पर पिता का नाम उसे खुद व खुद मालूम पड़ जाना था। माँ ने शायद उसे आज तक न तो उसके पिता का नाम बताया था और न ही उसके गोत्र का कोई पता दिया था। हो सकता है उसने खुद भी कभी न पूछा हो। पर माँ ने उसे उसके सवाल का कुछ अजीब सा ही जवाब दे दिया, 'नाहमेतद् वेद तात यद्गोत्रस्त्वमसि' बेटे मैं नहीं जानती कि तुम्हारा गोत्र क्या है। 'बहवहं चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वामलभे साहमेतन वेद यद्गोत्रस्तवमसि' अपनी जवानी में मैं सेविका थी और मैंने कइयों की सेवा की, उसी दौरान तुम मेरे पुत्र रूप में पैदा हो गए और मैं जानती ही नहीं कि तुम किस पिता की सन्तान हो। 'जाबाला नु नामाहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसि स सत्यकाम एव जाबाला ब्रुवीथा' मेरा नाम है जाबाला और तुम्हारा नाम है सत्यकाम, बस तुम खुद को सत्यकाम जाबाल दे कह देना।

क्या आप इस छोटे सम्वाद को छोटा मान सकते हैं? क्या इस चन्द सरल शब्दों के पीछे आपको एक ईमानदार माँ और उतने ही ईमानदार पुत्र का चेहरा और चरित्र नजर नहीं आ रहा? जबाला कुछ भी कह सकती थी। ऐसे ही कोई झूठा-सा नाम ले सकती थी। कह सकती थी कि तुम्हारा इस नाम का पिता तुम्हारे जन्म लेने से पहले ही मर गया था। पर उसने ऐसा कुछ नहीं किया, झूठ का एक अंश भी उसने इस पूरे सम्वाद में नहीं आने दिया और सच्चाई और सरलता से सराबोर इस जवाब को सत्यकाम ने अपने दिल में उतार लिया। हरिद्रुमत गौतम के पास विद्याध्ययन के लिए उनके गुरुकुल से प्रवेश पाने के मौके पर यह सवाल उठना ही था, सो वह उठा और गोत्र पूछे जाने पर सत्यकाम जाबाल ने माँ का कथन हरिद्रुमत को अक्षरश: दोहरा दिया।

इससे पहले कि हम चकित हों और अपने आज के विवेचन में गहरे उतर आएँ, हमें गुरु हरिद्रुमत गौतम की प्रतिक्रिया भी जान लेनी चाहिए, क्योंकि उससे हमें काफी सहायता अपने विवेचन में मिलने वाली है, 'तं होवाच नैतद् अब्राह्मणो विवक्तुमहति, समिधं सोम्य आहर उप त्वां नेष्ये' कोई ब्राह्मण ऐसा नहीं बोल सकता, इसलिए सोम्य जाओ लकड़ियाँ ले आओ, मैं तुम्हारा उपनयन करूँगा, अर्थात मैं तुम्हें अपना शिष्य बनाऊँगा। इसके बाद हरिद्रुमत ने सत्यकाम जाबाल को अपना शिष्य बनाया औश्र कहा कि ये लो चार सौ गउएँ, उन्हें लेकर वन जाओ और तब लौटना, जब से गउएँ एक हजार की संख्या में हो जाएँ। गुरु ने यह चार सौ और हजार गउओं वाला चक्कर क्यों चलाया, यह हमारा आज का विषय नहीं है। इस पर फिर कभी। आज बात सामाजिक रिश्तों पर।

हरिद्रुमत ने कहा कि कोई अब्राह्मण ऐसा नहीं कह सकता। क्या मतलब है इसका? यही कि हरिद्रुमत ने सत्यकाम को ब्राह्मण मान लिया। जरा सोचिए, सत्यकाम की माँ स्वयं कह रही है कि वह किसी के घर में सेविका थी और उसने कई पुरुषों की सेवा की थी। यदि धर्मशास्त्रों की बातों को अक्षरश: ठीक मान लें तो ब्राह्मण वर्ण की होने की हालत में जाबाल का सामाजिक रुतबा ऊँचा होना चाहिए। चूँकि वह सेविका थी, इसलिए जाहिर है कि सत्यकाम ब्राह्मण उन्होंने सत्यवती से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर लिया और उससे सत्यवती को जिस पुत्र की प्राप्ति हुई, वे वेदव्यास थे। पर इससे सत्यवती का कौमार्य भंग हुआ नहीं माना गया और जब राजा शन्तनु ने सत्यवती से विवाह का प्रस्ताव रखा था, तो यह बात आड़े आई ही नहीं, आड़े क्या आना हुआ उसकी चर्चा

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

रेलवे पटरियों के आस-पास बसते मोहल्लों की उपज

हल्द्वानी में रेलवे भूमि से अतिक्रमण हटाने की चर्चा पूरे देशभर में हो रही है। रेलवे की भूमि पर या उससे लगी सरकारी भूमि पर आंखिर इतने बड़े मोहल्ले बसने तक क्या होता रहा है? हजारों परिवार वर्षों से जम-जमाव कर लें तो उन्हें हटाना भी कठिन काम है।

असल में हल्द्वानी ही नहीं देशभर में अधिकांश जगह इस तरह का हाल है। रेलवे पटरियों के आस-पास बसते मोहल्लों की उपज क्या रही होगी? होता यह है कि घुमन्तु लोगों का डेरा ऐसे स्थानों पर देखा गया है। घूमकर, मांगकर, कबाड़ एकत्रित कर, छुटपुट कामधंधा कर जैसे-तैसे अपना जीवन यापन करने वाले उन स्थानों पर शरण ले लेते हैं जो उन्हें खाली दिखाई दी। यह अधिकार तो जन्म लेते ही सबको है भी कि वह धरती पर रहेगा। अब हमारे नियम-कानूनों की बेड़ियां रोकती हैं कि हर जगह नहीं रहना है। दूसरे के ग्राम, राज्य, देश में जाने और रहने के भी नियम हैं? रहें तो रहें कहाँ? इसके अलावा होता यह है कि सभी जगह जिन भी परिस्थितियों में जो लोग बस चुके हैं वही उनका समाज होता है और उनकी पीढ़ियां भी उसी रिवाज को देखती और मानती रही हैं। ऐसे में राजनीति में अपनी पैठ बढ़ाने वाले यत्र तत्र बस चुके लोगों को भी अपने में जोड़ते हुए उन्हें संरक्षण देते रहे हैं।

हल्द्वानी रेलवे स्टेशन से लगी भूमि पर भी ऐसा हुआ है। इधर-उधर से आकर रहने वालों की बस्ती बढ़ती चली गई। आर्थिक तंगी से घिरे लोगों ने कच्चे झोपड़े बनाकर अपने सर छिपाने की जगह तय कर ली। बहुत ही गन्दगी में यह लोग जानवरों की तरह वर्षों से रह रहे हैं। इसके अलावा रेलवे पटरी से लगे एक बड़े क्षेत्र में जमीन का टुकड़ा घेरते-घेरते लोग पटरी के पास तक पहुंच गये। चूंकि बनभूलपुरा क्षेत्र कई तरह से चर्चा में है और इस पटरी से लगा बड़ा हिस्सा भी इसमें है। राजनीति संरक्षण के चलते बिजली, पानी सहित सारी सुविधाएं सबको हैं। ऐसे हालातों को समझना चाहिये। ऐसी स्थिति आने ही न दें कि किसी भी समाज में उलझन हो।

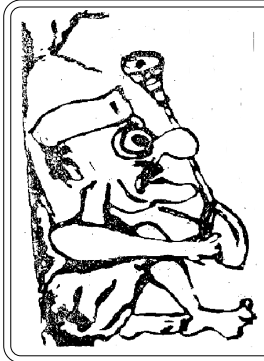

फसक

दाज्यू, जो-तो करके खूब वायरल हो रहे ठैरे

मुंह से आया बक दो, अब यही मूलमंत्र चल रहा है बल

दाज्यू, चर्चा में बने रहने के लिये नेता मंत्री, नेता अभिनेता, ठग, ढौंगी सब दबादब रील में रील बनाए जा रहे हैं। पूर्व कबीना मंत्री और दबंग नेता हरक सिंह ने सबकी लाइन मिला रखी है बल। अपने ही भाषण से चर्चा से में रहने वाले हरक ने ज्यादा बोलने पर गजबज कर दी तो माफी मांगनी पड़ी। दाज्यू, किसको जो रोहा जाए? जो-तो करके खूब वायरल हो रहे ठैरे। हरक सिंह बड़े-बड़े नेताओं की पोल पट्टी खोलने में लगे हैं। विधायक उमेश कुमार भी धकाधक सोशल मीडिया पर उबाल खा रहे हैं। मंत्री सुबोध उनियाल की पूछो मत.....।

दाज्यू, मुंह से आया बक दो, अब यही मूलमंत्र चल रहा है बल। इसी चक्कर में हरक सिंह फंस गये जब उन्होंने सिखों के लिये बोल दिया। फिर गुरुद्वारे में सेवा कर माफी भी मांग ली। लेकिन भाजपा को मौका मिल गया कि वह हरक का छाल घाम लगाए। दाज्यू, मूलमंत्र और मलमूत्र सब इसी धरती पर हो रहा है। हरक माफी मांग कर निपट गये लेकिन कुछ लोग नंगी तलवार लेकर उनके घर के बाहर धरने पर बैठ गये कि वह सामने आकर माफी मांगे। दाज्यू, राजनीति का जूता सबके फिट नहीं होने वाला ठैरा। हम क्या जो करें, बस देख-सुन सकते हैं। सोशल मीडिया पर झमाझम बरसात करने वाली तरुन्नम की वीडियो देख मोहन दा खुश हैं। कह रहे थे- 'गाली देने का स्टाइल भी अच्छा है। नाच गाना घर बैठे आसानी से उपलब्ध है आजकल।' दाज्यू, आंखों को पता नहीं क्या हो गया है, हमें तो दुनिया ही चरस-गांजा जैसी दिखाई देने लगी है। आंखों को भी क्या दोष दिया जाए? बद्रीनाथ राजमार्ग पर पुलिस चैकिंग के दौरान महिला के कब्जे से 512 ग्राम चरस बरामद हो गई। देघाट में 86 किलो गांजे के साथ दो लोग पकड़े गये। पहाड़ से तराई में बेचने के लिये ले जा रहे थे बल गांजा। हल्द्वानी के कालूसिद्ध मन्दिर में चोरी से वह फिर से चर्चा में है। दाज्यू, भीमताल विधानसभा क्षेत्र से भी खूब वायरलबाजी हो रही है। कांग्रेस नेता पनेरू ने तो गजब ही कर रखा है। विधायक कैड़ा भी दो हाथ आगे हैं। भगवान जाने 2027 के चुनाव में क्या जो होने वाला है इलाके में। पदमपुरी युगपुरुष एनडी की जन्मभूमि ठैरी लेकिन अब तो बहुत अवतारी नेता औतर रहे हैं बल। काशीपुर के राधेहरि रा. स्ना.महाविद्यालय में छात्र संघ ने पीरक्षा प्रभारी पर अभद्रता का आरोप लगाते हुए थाने में तहरीर दे डाली। दाज्यू, तभी कह रहे हैं कि चुपचाप समय गुजार लो। पता नहीं कौन सी हवा किस ओर से चलने लगे। बहुत मन करे तो पवनमुक्त आसन किया करो।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

पुस्तकालय में पानी भरने से नुकसान

पेरिस। फ्रांस की राजधानी पेरिस स्थित सुप्रसिद्ध लूव्र म्यूजियम के पुस्तकालय में पानी भर जाने से 400 पुस्तकें भीगीं। इनमें मिस्र की पढ़ाई से सम्बन्धित पत्रिकाएं और वैज्ञानिक प्रलेखन शामिल हैं, जिनका इस्तेमाल शोधकर्ता नियमित रूप से करते हैं। नुकसान को जांचा जा रहा है।

नाकाम हुई तख्तापलट की कोशिश

अबुजा। पश्चिम अफ्रीकी देश बेनिन में नाइजीरियाई सेना ने वहां के सुरक्षा बलों की सहायता करते हुए तख्तापलट की कोशिश को नाकाम किया है। बेनिन के राष्ट्रपति कार्यालय ने एक बयान में बताया कि बेनिन में नाइजीरिया से तुरन्त हवाई सहायता देने और सैनिकों को भेजने में मदद मांगी थी, ताकि देश के संविधान और संस्थाओं की रक्षा की जा सके।

आनलाइन वीजा शुरू करेगा चीन

नई दिल्ली। चीन जाने वाले भारतीयों के लिये चीनी दूतावास ने आनलाइन वीजा प्रोसेसिंग अप्रूवल को लेकर नोटिस जारी किया है। भारत में चीनी राजदूत शू फीहोंग ने बताया कि भारत स्थित चीनी दूतावास 22 दिसम्बर से आनलाइन वीजा आवेदन प्रणाली शुरू कर रहा है। इस बीच भारत ने अपने नागरिकों को चीन की यात्रा पर सावधानी वरतने की सलाह दी है।

इजराइल को कई नेताओं का समर्थन

यरुशलम। इजराइल के प्रधानमंत्री बेजामिन नेतन्याहू ने संसद में दिए एक तेज तर्रार भाषण में देश के प्रबन्धन को लेकर अपनी नीति का बचाव किया। उन्होंने कहा कि यहूदी राष्ट्र के खिलाफ बढ़ती यहूदी विरोधी भावनाओं के बावजूद इजराइल को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी समेत दुनिया के कई देशों एवं नेताओं का अभूतपूर्व समर्थन प्राप्त है।

अवैध रूप से नौकरी देने पर जेल

लन्दन। दक्षिण-पूर्वी इंग्लैण्ड स्थित एक 'केयर होम' एजेंसी के निदेशक को उन भारतीय प्रवासियों को नौकरी पर रखने का दोषी पाए जाने के बाद ढाई साल की जेल की सजा सुनाई गई जिन्हें ब्रिटेन में काम करने का अधिकार प्राप्त नहीं है। ब्रिटेन ने होम केयर एजेंसी घर पर रहने वाले बुजुर्गों, दिव्यांगों या बीमार लोगों की देखभाल में सहायता प्रदान करती है। ये एजेंसी ऐसे प्रशिक्षित देखभालकर्ता मुहैया कराती है जो चिहित्सकीय और गैर चिकित्सकीय दोनों तरह की सहायता दे सकते हैं।

भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों के क्रम में प्री एसआईआर

हर मतदाता तक पहुंच सुनिश्चित करेंगे फिल्ड अफसर

देहरादून। भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देशों के क्रम में उत्तराखण्ड राज्य में प्री एसआईआर गतिविधियां शुरू कर दी गई हैं। इस चरण में आगामी विशेष गहन पुनरीक्षण को लेकर प्राथमिक तैयारियां की जाएंगी, साथ ही एसआईआर के दौरान मतदाताओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसके दृष्टिगत प्रत्येक मतदाता तक पहुंच, समन्वय और सम्वाद अभियान पर कार्य किया जा रहा है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी डॉ. बीवीआरसी पुरुषोत्तम ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा अलग-अलग वर्षों में इससे पूर्व 11 बार विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम (एसआईआर) पूरे देश में सम्पादित किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि उत्तराखण्ड में वर्ष 2003 में एसआईआर किया गया था। बताया कि 2025 में आयोग द्वारा प्रथम चरण में बिहार और दूसरे चरण में 12 अन्य राज्यों में एसआईआर की प्रक्रिया गतिमान है। आयोग का इस पूरी प्रक्रिया के पीछे उद्देश्य हर पात्र मतदाता को मतदाता सूची में शामिल करना है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि प्री एसआईआर फेज में प्रदेश की वर्तमान मतदाता सूची में शामिल लगभग 40 वर्ष तक की आयु के ऐसे मतदाता जिनके नाम 2003 की मतदाता सूची में दर्ज थे उनकी सीधे बीएलओ एप से मैपिंग की जाएगी। इसके साथ ही 40 वर्ष या उससे अधिक आयु के ऐसे मतदाता जिनके नाम 2003 की मतदाता सूची में किसी कारणवश नहीं है तो उनके माता-पिता अथवा दादा-दादी के नाम के आधार पर प्रोजनी के रूप में मैपिंग की जाएगी।

इस अवसर पर अपर मुख्य निर्वाचन अधिकारी डा. विजय कुमार जोगदण्डे, संयुक्त मुख्य निर्वाचन अधिकारी प्रकाश चन्द्र, सहायक मुख्य निर्वाचन अधिकारी मस्तु दास मौजूद थे।

नैनी झील के चारों ओर होगा सुरक्षा दीवारों का पुनर्निर्माण

भूगर्भीय गतिविधियों की जांच कराने हेतु मृदा परीक्षण

नैनीताल। नैनी झील की कई सुरक्षा दीवारें जीर्ण-क्षीर्ण हो चुकी हैं। इनकी मरम्मत की बात उठती रही है। अब सिंचाई विभाग का कहता है कि इस कार्य से पूर्व झील किनारे सुरक्षा दीवारों को हुए नुकसान के कारणों के साथ भूगर्भीय गतिविधियों की जांच कराने हेतु झील की परिधि क्षेत्र में मृदा परीक्षण कराया जा रहा है। यह सर्वे रिर्पोट आईआईटी रुड़की को भेजी जाएगी, जिसके सुझावों के बाद ही सुरक्षा दीवारों के उपचारात्मक स्वरूप को अन्तिम रूप दिया जायेगा।

बताते चलें कि चूहे और कीटों को लेकर काफी चर्चाएं हुई हैं और कहा जा रहा है कि नैनी झील की दीवारों सहित नगर के आबादी क्षेत्रों में चूहे अपने बिल बनाने के लिये धरती को भीतर से खोखला कर रहे हैं। मल्लीताल स्टेण्ड के पास वर्ष 2023 में दीवार के ध्वस्त होने के कारण स्पष्ट तौर पर चूहों को माना गया था। साथ ही नैनी झील के माल रोड ी ओर पर्यटन विभाग के कार्यालय के पास हिस्से में बड़ा भूधंसाव हुआ है। इन्हीं सब कारणों से आयुक्त दीपक रावत ने नैनी झील का निरीक्षण के बाद तत्काल दीवारों की मरम्मत का प्रोजेक्ट तैयार करने के निर्देश दिए थे।

सिंचाई विभाग अधिशासी अभियन्ता डी.के.सिंह ने बताया है कि इसके अतिरिक्त चूंकि झील की दीवारें लगातार पानी के सम्पर्क में रहनी हैं, इसलिए सिंचाई विभाग चाहता है कि दीवारों का पुर्निर्माण के कार्य सामान्य दीवार निर्माण जैसा न हो, वरन इससे पहले मृदा परीक्षण करा लिया जाए। इस हेतु झील की लगभग 3.4 किलोमीटर परिधि क्षेत्र में 12 मीटर तक गहरे छेद कर मिट्टी के नमूने लिए जा रहे हैं, जिन्हें आईआईटी रुड़की को वैज्ञानिक जांच हेतु भेजा जाएगा। इसके आधार पर ही दीवारों का निर्माण किया जाएगा। दीवार निर्माण की डीपीआर भेजी जा चुकी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नौले-धारे

उत्तराखण्ड में जल मन्दिरों की संस्कृति का संरक्षण को भी हो गये हैं मजबूर!

हरीश चन्द्र अन्डोला

पहाड़ों में कभी नौले और धारे ही पीने के पानी के मुख्य साधन हुआ करते थे। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों के लोग पीने के पानी के लिए इन नौलों पर ही निर्भर हैं। पश्चिमी हिमालय में उत्तराखण्ड के शान्त पर्वतीय क्षेत्र में, नौलों के नाम से प्रसिद्ध एक प्राचीन जल संग्रहण प्रणाली, स्थानीय आबादी के साथ-साथ पर्यावरण की भी जीवनदायिनी रही है। लघु मन्दिरों की याद दिलाने वाली ये संरचनाएँ प्राकृतिक रूप से नीचे गिरते पानी को ग्रहण करती हैं और फिर उसे लोगों द्वारा पीने के लिए ग्रहण किया जाता है। सीमित संसाधनों वाले ग्रामीण समुदायों के लोगों को अपने दैनिक उपयोग के लिए ताज़ा पानी प्राप्त करने का यही एकमात्र साधन है।

नौले अपनी विस्तृत पत्थर कटाई और कलात्मकता के कारण दर्शनीय हैं। ये जीवन के स्रोत के रूप में जल के प्रति समुदाय के सम्मान और क्षेत्र की समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। अतीत में न केवल लोग इन स्थानों पर एकत्रित होते रहे हैं, बल्कि ये मानव और प्रकृति के बीच एकता पर भी बल देते रहे हैं। आज, नौलों पर आधुनिकीकरण और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का खतरा मंडरा रहा है, जो दुनिया भर में व्याप्त चुनौतियाँ हैं। इसके साथ ही बदलती जलवायु के कारण होने वाले सम्भावित परिवर्तन और बढ़ती जल आवश्यकताएँ भी जुड़ी हैं। विभिन्न स्थानीय पहलों द्वारा किए जा रहे कार्यों का उद्देश्य इस स्थानीय वास्तुकला के स्थलों का जीर्णोद्धार करना और साथ ही, जनता को उनकी सांस्कृतिक और कार्यात्मक भूमिकाओं से अवगत कराना है। इन स्थलों के अलावा, इनसे जुड़े ज्ञान और परंपराओं को भी भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। पहाड़ में प्राकृतिक जलस्रोत तेजी से खत्म हो रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण की चाल-खाल जैसी समृद्ध परम्परा अब लगभग लुप्त है तो शहरों में गलत नियोजन ने प्राकृतिक स्रोतों का दम निकाल दिया है। इस गम्भीर विषय पर पहाड़ में अभी तक चिन्तन शुरू नहीं हुआ है। नौलों का भाग्य अब उपेक्षा और ह्रास का है, जिसका मुख्य कारण ढेर सारी नई तकनीक का आगमन और व्यापक रूप से पाइप जलापूर्ति प्रणालियाँ स्थापित होना है। पड़ोसियों ने कई नौलों को छोड़ दिया है क्योंकि वे अब पेड़-पौधे से आच्छादित हैं या उपयोग में नहीं हैं, जिससे स्थानीय समुदायों को ईंधन मिल रहा है और उन्हें अविश्वसनीय लेकिन आधुनिक स्रोत मिल रहे हैं। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और शहरी विकास के मुद्दों ने नौलों से जुड़ी समस्याओं की संख्या बढ़ा दी है, जिससे उनकी मूल सांस्कृतिक और कार्यात्मक भूमिकाएँ समाप्त हो रही हैं। दूसरी ओर, स्थानीय समुदायों, संगठनों और सरकारी एजेंसियों द्वारा इन संरचनाओं के जीर्णोद्धार और संरक्षण के लिए मिलकर किए गए प्रयासों से नौलों के पुनरुद्धार और संरक्षण की संभावनाएँ खुलती हैं।

हंस फाउंडेशन परियोजना प्राकृतिक जल स्रोतों का उपयोग करती है और यह तथ्य कि स्यूंराकोट नौला एक संरक्षित स्मारक है, नौलों की सांस्कृतिक और पर्यावरणीय विरासत को संरक्षित करने के नेक इरादों का उदाहरण है। लोगों के ये व्यवहार उत्प्रेरक के रूप में नौलों की स्थायी प्रकृति और समुदाय में सांस्कृतिक गतिविधियों का मुख्य आधार बनते हैं। उत्तराखण्ड में जल संरक्षण की प्राचीन पद्धति, जिसे अब नौला के नाम से जाना जाता है, एक युगान्तकारी आविष्कार था जिसका इतिहास सदियों पुराना है। नौला प्रणाली कुमाऊँ में तो बहुत प्रचलित है, लेकिन गढ़वाल में यह कम ही जानी जाती है। केवल नौला ही नहीं, बल्कि धार और नौला जैसे जनहितकारी जल निर्माण भी प्राचीन काल में पुण्य का कार्य माने जाते थे। आज भी प्रचलित नौले कत्यूरी और चंद राजवं शों के समय कुमाऊँ में ही बनाए गए थे। उदाहरण के लिए, सूर्यकोट (अल्मोड़ा) में मौजूद 1000 साल पुराना नौला, गंगोलीहाट में हाट कालिका मन्दिर के पास राजा रामचंद्र देव द्वारा स्थापित 700 साल पुराना नौला, बागेश्वर जिले में 7वीं शताब्दी में बना गढ़शेर नौला और राजा थोरचंद द्वारा 1272 में बनवाया गया बालेश्वर नौला। रानीधारा नौला (अल्मोड़ा), पटियानी नौला और शीलगांव (अल्मोड़ा) का तुलारामेश्वर नौला और पहाड़पानी नौला (नैनीताल) कुछ अन्य उदाहरण हैं। कुछ नौले पत्थर पर बहुत ही कुशलता और खूबसूरती से उकेरे गए थे। ऐसा ही एक उदाहरण चम्पावत जिले के ढकना गाँव में एक हथिया नौला है। नौलों की उपस्थिति को दर्शाने वाली देवी-देवताओं की मूर्तियां, जीवनदाता के रूप में जल के प्रति समुदाय की आस्था का संकेत हैं। उत्तराखण्ड क्षेत्र में जल प्रबन्धन प्रणाली की एक विशेषता नौले थे, खासकर कुमाऊँ क्षेत्र में। समुदाय ने इन संरचनाओं के रखरखाव और संरक्षण की ज़िम्मेदारी ली और इस प्रकार ये उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक भलाई का एक अभिन्न अंग बन गए। नौलों के डिज़ाइन और निर्माण में जलवायु और भूगोल की विशिष्ट परिस्थितियों को ध्यान में रखा गया था और डिज़ाइनों को पर्यावरण के अनुकूल माना गया था, जिससे यह स्पष्ट होता था कि वे समुदाय के जल विज्ञान और पर्यावरणीय स्थिरता के ज्ञान का परिणाम थे। नौलों का निर्माण सटीकता के साथ किया गया था जिससे उनमें पत्थरों के भण्डार और भूलभुलैया जैसी नक्काशी या नक्काशी का समावेश था जो न केवल सुन्दरता प्रदान करती थी बल्कि उस समय की संस्कृति को भी दर्शाती थी। यह तथ्य कि नौले समुदाय के लिए पेयजल और अन्य घरेलू उपयोगों का मुख्य स्रोत थे, यह एक वास्तविकता थी कि लोग सदियों तक इनका उपयोग करते रहेंगे और इनका रखरखाव भी करते रहेंगे। नौलों के निर्माण और रखरखाव की परम्परा आने वाली पीढ़ियों को विरासत में मिली, इसलिए समुदाय के सदस्य इनकी देखभाल में सक्रिय रूप से शामिल रहे। नौले की रक्षा करने वाले एक लाल साँप की पौराणिक कथा, इस मूल भाव के सांस्कृतिक पहलू को और भी गहरा करती है और इस अवधारणा को नया महत्व देती है कि इन संरचनाओं के रखरखाव की ज़िम्मेदारी समुदाय की ही होनी चाहिए। समुदाय का मूल भाव जल के प्रति उनके गहरे सम्मान को दर्शाता है, क्योंकि उनकी मान्यता है कि जल एक दिव्य जीवनदायी संसाधन है।

उत्तराखंड में इन नौलों और धारों का ऐतिहासिक व सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्व है। यहाँ के पहाड़ी इलाकों में कई नौले अत्यन्त प्राचीन हैं। उत्तराखण्ड में विवाह और अन्य विशेष अवसरों पर नौलों- धारों में जल पूजन की भी समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा दिखाई देती है, जो एक तरह से मानव जीवन में जल के महत्व को इंगित करती है। जरूरत है तो इन नौलों के संरक्षण की, जिससे पर्यावरण का सतत विकास तो होगा ही, साथ ही सांस्कृतिक विरासत के तौर पर हिमालय की यह पुरातन परम्परा आगे कई पीढ़ी तक पहुँच सकेगी।

ज्योतिष की बातें- 260

इस सप्ताह चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य कोई भी ग्रह राशि परिवर्तन नहीं कर रहा है। सम्पूर्ण सप्ताह सूर्य व मंगल दोनों मित्रराशि धनु में, वुध शुक्र व शनि समराशि वृश्चिक धनु व मीन में, गुरु शत्रुराशि मिथुन में गोचर करेंगे। तथा चन्द्रमा इस सप्ताह मकर, कुम्भ व मीन राशि में क्रमशः गोचर करेगा। इस स्थाई स्तम्भ में जो ग्रहों का गोचरफल प्रस्तुत किया जाता है वह मन्त्रेश्वर कृत फलदीपिका नामक ग्रन्थ के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। यह गोचरफल नितान्त स्थूल होता है। व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली आदि पर निर्भर करता है।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 150

निर्बल स्वास्थ्य के अन्य कारण

प्रायः प्रदूषण और मिलावट को बीमारियों का मुख्य कारण माना जाता है लेकिन मेरे विचार से निर्बल स्वास्थ्य के अन्य कारण भी हैं। पहले सरसों के तेल का उपयोग भोजन में, मालिश के लिए, दर्द चोट मोच या घाव होने पर भी प्रयोग होता था। लेकिन आजकल सरसों का तेल घरों से लगभग गायब हो चुका है। उसके स्थान पर तरह-तरह के रिफाइंड तेल शैंपू, लोशन आदि मार्केट में आ चुके हैं। आज से लगभग चालीस साल पहले सरसों के तेल का बना हुआ काजल आँखों में प्रत्येक व्यक्ति लगाता था। यह परम्परा अब लुप्त हो चुकी है। इसी प्रकार से बहुत सी स्वास्थ्यप्रद परम्पराएं और वस्तुएं अब विलुप्त हो गई हैं। दूसरी तरफ देखें, जहाँ पर एक लीटर खाद्य तेल एक महीने में उपयोग होता था वहाँ पर अब चार-पाँच लीटर रिफाइंड तेल एक महीने में उपयोग होने लगा है। पहले एक घर में एक पाव लीटर दूध इस्तेमाल होता था अब तीन लोगों के परिवार में दो लीटर दूध का सेवन होता है। मौसम के विपरीत भी फलों का प्रयोग बहुत अधिक मात्रा में होने लगा है। पहले पर्व, त्योहारों पर ही पुए, पकवान, मिष्ठान आदि बनाए जाते थे अब तो जब इच्छा हो तब, स्पेशल के नाम पर कभी भी ये विशिष्ट खाद्य पदार्थ सेवन किए जाते हैं। किसी भी वस्तु का हीनयोग और अतियोग दोनों ही स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं ।

इसके साथ ही पिघलता हिमालय साप्ताहिक समाचार पत्र में 'सम्यक् विचार' नामक इस स्थाई स्तम्भ में मेरा यह 150 वाँ लेख है और लगभग तीन वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस स्तम्भ में मैंने अपने राजनीतिक, टेक्निकल, ज्योतिषीय, स्वास्थ्य, सामाजिक, धार्मिक आदि सभी प्रकार के विषयों पर अपने अध्ययन के आधार पर शास्त्रसम्मत विचार प्रकट किए हैं। मेरे इन विचारों से सम्पादक अथवा पाठकों को सहमत होना आवश्यक नहीं है लेकिन जिन्होंने मेरे विचार पसन्द किए हैं उन्हें इन विचारों का प्रचार-प्रसार अवश्य करना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

वन्यजीव आक्रामक हैं इन दिनों

-च्यूरानी में तेंदुए ने ली ग्रामीण की जान
-धामी और फल्याटी ग्रामों में भालु बने दादा
-थल और रानीखेत में बन्दरों का आतंक
-गजल्ड गांव में आदमखोर गुलदार हुआ ढेर

शीत के इन दिनों में वन्यजीव आक्रामक हो चुके हैं। जंगलों का कटान, अतिक्रमण और भोजन की तलाश में भटक रहे जानवरों को लेकर चर्चाएं होती रहती हैं लेकिन इनके संरक्षण के उपाय नहीं हो रहे हैं। ऐसे में भटकते जानवर हमलावर बनते जा रहे हैं और खतरे में घिर कर स्वयं भी मौत के मुंह चले जाते हैं।

लोहाघाट के बाराकोट ब्लाक के च्यूरानी ग्राम के धरगड़ा तोक में तेंदुए ने ग्रामीण की जान ले ली। एक माह में दो ग्रामीणों को मौत से क्षेत्रवासी सहमे हुए हैं। उन्होंने तेंदुए को नरभक्षी घोषित करते हुए मारने की मांग उठाई है।

नाचनी के धामी और फल्याटी ग्रामों में भालू दादा बने हुए हैं। झुण्ड में आ रहे भालू किसी के भी आंगन में आकर नुकसान कर रहे हैं। वन क्षेत्राधिकारी लवराज पांगती का कहना है कि ग्राम में भालुओं के घुसने की सूचना पर वन दरोगा त्रिलोक सिंह राणा के नेतृत्व में टीम भेजी गई। टीम ग्रामीणों को जागरूक कर रही है और रात्रि में भालुओं को खदेड़ने का काम भी किया जा रहा है।

थल कस्बे में बन्दरों का भारी आतंक बना हुआ है। महिलाओं के हाथ की रोटी झपट कर तक ले जा रहे हैं। वन विभाग ने पहले बन्दर पकड़ को पिंजरा लगाया था लेकिन अब फिर से वही हाल है। बन्दर खेतों में भी नुकसान कर रहे हैं। रानीखेत बाजार क्षेत्र से लेकर चिलियानौला तक बन्दरों का आतंक बना हुआ है, ऐसे में स्कूल जाने वाले बच्चों और राहगीरों को भय बना रहता है कि कहीं उनपर न झपट पड़े।

पौड़ी के गजल्ड गांव में आतंक का पर्याय बन चुके आदमखोर गुलदार की खोज के लिये मशहूद शिकारी जाय हुकिल को जिम्मेदारी दी गई। बाला सुन्दरी मन्दिर से पूजा कर लौट रहे राजेन्द्र नौटियाल को गुलदार ने निवाला बना लिया था, इसके बाद वन विभाग ने गुलदार को आदमखोर घोषित कर उसे मारने के लिये गांव में दो विभागीय शूटर तैनात किये थे। इसके बाद नरभक्षी गुलदार ढेर हुआ।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पाटी में तेंदुए की दहशत, नैनसिंह ने श्रमदान से बनाई मिशाल

बच्चों की सुरक्षा के लिए अकेले काटी लैंटाना की झाड़ियाँ, ग्रामीण समाज को दिया संदेश

राजेन्द्र गहतोड़ी

चम्पावत। उत्तराखण्ड के पर्वतीय ग्रामीण अंचलों में जहाँ लगातार हो रहे पलायन के कारण कई गाँव लगभग वीरान हो चुके हैं और सामाजिक सहयोग व श्रमदान की परम्पराएं भी धीरे-धीरे कमजोर पड़ती जा रही हैं, वहीं विकासखण्ड पाटी की ग्राम पंचायत बांस-बसवाड़ी से एक प्रेरणादायी उदाहरण सामने आया है।

बीते कुछ दिनों से क्षेत्र में तेंदुए की लगातार आवाजाही से ग्रामीणों और विशेषकर स्कूल जाने वाले बच्चों में भय का माहौल बना हुआ है। तेंदुए द्वारा गाँव के दीपक सिंह की चार बकरियों तथा रेवती देवी की दुधारू गाय को अपना शिकार बनाए जाने के बाद यह भय और गहरा हो गया। इसी बीच ग्राम पंचायत स्थित राजकीय उच्चतर प्राथमिक विद्यालय के चारों ओर लम्बे समय से फैली लैंटाना (कुर्री) और जंगली झाड़ियों ने बच्चों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिन्ता पैदा कर दी थी।

विद्यालय परिसर और मुख्य मार्ग के आसपास उगी घनी झाड़ियों के कारण बच्चों को भय के वातावरण में आवागमन करना पड़ रहा था। अभिभावकों और शिक्षकों का कहना था कि इन झाड़ियों के बीच छिपे जंगली जानवरों का खतरा हर समय बना रहता है, जिससे पढ़ाई का माहौल प्रभावित हो रहा था।

ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में विकास खण्ड पाटी के बांस-बसवाड़ी क्षेत्र से क्षेत्र पंचायत सदस्य, मात्र 30 वर्षीय श्री नैन सिंह मेहता ने सामाजिक जिम्मेदारी का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने किसी सहायता की प्रतीक्षा किए

बिना स्वयं ही विद्यालय के मुख्य मार्ग और परिसर के चारों ओर फैली लैंटाना की घनी झाड़ियों को काटकर साफ किया। उनका यह श्रमदान न केवल बच्चों के लिए राहत का कारण बना, बल्कि पूरे क्षेत्र में चर्चा का विषय भी बन गया।

ग्रामीणों ने बताया कि जब अधिकांश युवा रोजगार की तलाश में पलायन कर चुके हैं और सामूहिक श्रमदान जैसी परम्पराएं लगभग समाप्तप्राय हो चुकी हैं, ऐसे समय में एक युवा जनप्रतिनिधि द्वारा अकेले आगे आकर जोखिम उठाना समाज के लिए प्रेरक सन्देश है।

श्री नैन सिंह मेहता ने कहा कि बांस-बसवाड़ी क्षेत्र में लैंटाना जैसी झाड़ियाँ भूमि को बंजर बना रही हैं और साथ ही जंगली जानवरों के छिपने का सुरक्षित ठिकाना भी बन चुकी हैं। उन्होंने बताया कि भविष्य में ग्रामीणों को जागरूक कर इस कुर्री (लैंटाना) रूपी अभिशाप को जड़ से हटाने के लिए सामूहिक अभियान चलाया जाएगा, ताकि गाँव और विद्यालय परिसर बच्चों तथा ग्रामीणों के लिए सुरक्षित बन सकें।

आज जब ग्रामीण जीवन में सहयोग की भावना कमजोर पड़ती दिख रही है, ऐसे समय में नैन सिंह मेहता का यह प्रयास न केवल एक समस्या का समाधान है बल्कि यह याद दिलाता है कि सार्थक नेतृत्व वही है जो संकट के समय सबसे पहले आगे खड़ा हो। नैनसिंह के कार्यों की चारों ओर प्रशंसा हो रही है।

प्रधानाध्यापक विनोद गिरी कहते हैं 'आज के समय में यह सुखद आश्चर्य है एक युवा जनप्रतिनिधि स्वयं संज्ञान लेकर विद्यालय के प्रति सम्वेदनशील है और वित्तीय संसाधनों के अभाव सरकारी मदद का इन्तजार किए बिना कुर्री की झाड़ियों को जड़ से उखाड़ कर बच्चों के लिए सुरक्षित वातावरण तैयार करता है यह बहुत सुखद आश्चर्य है।'

पर्यावरणविदों ने देवदार पर बांधे रक्षा सूत्र

उत्तरकाशी। हिमालय हैं तो हम हैं अध्ययन यात्रा, देवदार पूजन अभियान के तहत पर्यावरणविदों की टीम गंगोत्री धाम के समीप भैरोघाटी पहुंची। टीम ने देवदार के पेड़ों पर रक्षासूत्र बांधकर हिमालय के संरक्षण का सन्देश दिया। कहा कि यह वृक्ष हिमालय की धरोहर है। यह नष्ट हो जाएंगे तो हिमालय के अस्तित्व को बड़ा खतरा हो सकता है।

यात्रा दल ने देवदार पेड़ों की पूजा की। उसके बाद लंका सहित भैरो घाटी में सभी पेड़ों पर रक्षासूत्र बांधकर उनके संरक्षण का आह्वान किया। रक्षासूत्र आन्दोलन के प्रेरक सुरेश भाई ने कहा कि अच्छा होता कि डॉ. मुरली मनोहर जोशी और डॉ. कर्ण सिंह पीएस, पर्यावरण और वन मंत्री के साथ तुरन्त बैठक करके देवदार के पेड़ों के कटान को रुकवाने का प्रयास करते। कल्पना ठाकुर ने कहा कि गंगा और हिमालय की रक्षा के लिए देवदार के पेड़ ग्लेशियरों की रक्षा कर रहे हैं। इस मौके पर आयुष जोशी, गोपाल आर्य, पूरण रावत, हेमन्त ध्यानी मौजूद थे।

परिक्रमा

एक करोड़ से संवरेगा सिमतोला ईको पार्क

अल्मोड़ा। प्राकृतिक सुन्दरता, समृद्ध जैव विविधता और मनोहारी हिमालय के शानदार नजारों के लिये प्रसिद्ध सिमतोला ईको पार्क नगर का नया पर्यटन स्थल बनेगा। पार्क में बुजुर्गों के लिए मेडिटेशन सेन्टर, युवाओं के लिए जिप लाइन साइकिलिंग, बाइक राइडिंग तो छोटे बच्चों के लिये वोटिंग की सुविधा होगी। केन्द्र सरकार ने नगर वन योजना के तहत लगभग एक करोड़ लागत वाले प्रस्ताव को सैद्धान्तिक स्वीकृति दे दी है।

नगर के कसार देवी मार्ग में सिमतोला पहाड़ी है। बांज, देवदार, चीड़, अतीस आदि के अलावा औषधीय पौधों की खासा संख्या यहाँ है। यहीं से हिमालय का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। वर्ल्ड वाचिंग, एडवेंचर, योग ध्यान के लिये यह बेहतरीन स्थल है। 26 हैक्टेयर में फैले इस स्थल को वन विभाग ने 2010 में विकसित किया था। अब वन विभाग ने इसे नए पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की योजना बनाई है।

पीएसपी की तीसरी यूनिट का उद्घाटन

नई टिहरी। टीएचडीसी इण्डिया लिमिटेड, विद्युत क्षेत्र की अग्रणी कम्पनी ने उत्तराखण्ड के टिहरी में एक हजार मेगावाट वेरिएबल स्पीड पम्प स्टोरेज प्लान्ट की तीसरी यूनिट (25 मे.वा.) की वाणिज्यिक संचालन (सीओडी) प्रक्रिया को सफलतापूर्वक शुरू करके एकऔर बड़ी उपलब्धि हासिल की है। यह उपलब्धि भारत के स्वच्छ ऊर्जा क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है। जिसने टिहरी पीएसपी को देश का पहला वेरिएबल स्पीड पम्प स्टोरेज प्लान्ट और किसी भी सेन्ट्रल पब्लिक सेक्टर इन्टरप्राइजेज द्वारा संचालित किया जा रहा है। यह अपनी तरह का सबसे बड़ा पीएसपी बना दिया है। पहली और दूसरी यूनिटों की सीओडी प्रक्रिया जून और जुलाई 2025 में प्रारम्भ होने के बाद अब तीसरी यूनिट की सीओडी प्रक्रिया की शुरूआत से टीएचडीसी की टेक्नोलॉजिक एडवांस्ड और ग्रिड-रिस्पॉन्सिव हाइड्रोपावर सॉल्यूशन देने में लीडरशिप और मजबूत हो गयी है।

इस अवसर पर केन्द्रीय विद्युत तथा आवास एवं शहरी कार्य मंत्री भारत सरकार मनोहर लाल ने वर्चुअल माध्यम से तीसीरी यूनिट को शुरू किया।

गर्ब्यांग के विस्थापितों को मिलेगा हक

देहरादून। 70 के दशक में भूधंसाव के कारण गर्ब्यांग में खतरा हो गया था। 250 परिवारों को ऊधमसिंह नगर में एक सकड़ भूमि आवंटित कर बसाया गया था। अब 47 साल बाद जाकर इन विस्थापितों को मालिकाना हक दिया जायेगा। इसके अलावा अल्मोड़ा, बागेश्वर के मैग्नेसाइट फैक्ट्री के कारण विस्थापित

मैग्नेसाइट फैक्ट्री के कारण विस्थापितों को भी मालिकाना हक मिलेगा

हुए परिवारों को भी मालिकाना हक मिलेगा। इन्हें भी जगह दी गई थी। कैबिनेट ने इन सभी परिवारों को वर्ग तीन और चार श्रेणी के तहत 2004 के सर्किल रेट के आधार पर ही मालिकाना हक देने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। 2016 के सर्किल रेट के आधार पर 38 लाख रुपए प्रति एकड़ जमा कराना था। अब 2004 के सर्किल रेट के आधार पर चार लाख रुपये प्रति एकड़ की दर से जमीनों का विनियमितीकरण हो सकेगा।

पूछड़ी में प्रभावितों को लेकर संघर्ष

रामनगर। प्रशासन द्वारा वन विभाग की भूमि पर अवैध कब्जा हटाने की कार्रवाई के बाद से प्रभावितों का संघर्ष जारी है। मामले में प्रशासन सख्त है और नेता अपने तरीके से बयान जारी कर रहे हैं। लेकिन यह बात सत्य है कि पीड़ितों के लिये तैयारी पहले से होनी चाहिये थी ताकि ठण्ड के इन दिनों में उन्हें राहत मिलती। आशियाना टूटने के बाद सब कुछ बिखर जाने से ये परिवार अब रोटी के लिये मोहताज हैं। पीड़ितों ने सत्ता व विपक्षी के नेताओं पर भी रोष जताया है कि कोई सुधलेवा नहीं है। उपपा के प्रभात ध्यानी इनके साथ हैं। ब्लाक प्रमुख और संजय नेगी ने संघर्ष में जुड़ गये हैं।

अब जगतसिंह पांगती जीजीआईसी थल

थल। कन्या इण्टर कालेज को अब स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जगत सिंह पांगती के नाम से जाना जाएगा। शासन के निर्णय के बाद कालेज में आयोजित समारोह में विधायक फकीर राम टम्टा ने अनावरण किया। स्व. पांगेती के पौत्र पूर्व अपर महानिदेशक भूगर्भ टी.एस.पांगती ने अपने दादा की जीवनी और उनके किए गए कार्य का विस्तार से उल्लेख किया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में विद्यालय की प्रधानाचार्य विमला रावत, श्रीमती जानकी पांगती, पूर्व अनुसेवक सचिव करन राम, गंगा सिंह पांगती, पूर्व एसडीओ भीम सिंह वृजवाल, ग्राम प्रधान नवीन चन्द्र पाठक, एडीओ रमन पांगती, शिक्षा विभाग के संजीव कुमार कोहली, दिनेश चन्द्र पाठक, बीडीसी सदस्य बसन्त लोहनी, सहकारी बैंक के पूर्व उपाध्यक्ष नरेन्द्र रौतेला, ललित पांगती, अभिभावक संघ के अध्यक्ष कवीन्द्र चन्द, नवीन कुमार, मनोहर आर्या सहित अन्य मौजूद थे। समारोह का संचालन अध्यापिका गीता पन्त ने किया।

यात्रा पर मांग काली, भक्त उमड़े

गुप्तकाशी। प्रसिद्ध सिद्धपीठ कालीमठ की देवरा यात्रा का शुरू होकर अपने भक्तों को आशीर्वाद देने निकल पड़ी है, जो मकर संक्रान्ति पर देवप्रयाग में स्नान करेंगी। 15 वर्षों बाद मां काली की देवरा यात्रा ने अपने प्रथम चरण की यात्रा के तहत अभी देवप्रयाग के लिये प्रस्थान किया। हयून गांव के ब्रह्मा व देवशाल के आचार्य की उपस्थिति में भोग मूर्तियों की प्रतिष्ठा कर हवन कर इन्हें शुद्ध किया गया। हक हकूक धारियों ने डोली की परिक्रमा कर आगे को रवाना किया।

अनुष्ठान में सवा मन रोट वितरण

कोटद्वार। श्री सिद्धबली मन्दिर में चल रहे तीन दिवसीय सिद्धबली बाबा वार्षिक महोत्सव का धार्मिक अनुष्ठान के साथ समापन हुआ। इस अवसर पर भजन गायक लखबीर सिंह लक्खा सहित कलाकारों ने भक्तिमय गीत प्रस्तुति दी। अनुष्ठान में एकादश कुण्डीय यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ ही जागर लगी और सवा मन रोट वितरण के साथ आयोजन सम्पन्न हुआ।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सत्यकाम जाबाल.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

तक नहीं हुई कि सत्यवती का सम्बन्ध कभी पराशर से हुआ था और कि वह पुत्रवती है। समाज में सम्मान पराशर का भी बना रहा।

इन उदाहरणों को पढ़कर कैसा लगता है अपने विख्यात पूर्वजों के बारे में? पर महाभारत के पात्र तो मानो सारी सीमाएँ तोड़ देते हैं। कुन्ती को विवाह से पूर्व कर्ण नामक जिस पुत्र की प्राप्ति हुई थी, उसे सूर्य की सन्तान माना गया। विवाह के बाद उसके तीनों पुत्र युधिष्ठिर भीम और अर्जुन क्रमशः धर्मराज, वायुदेव और इन्द्र के पुत्र माने गए। माद्री के दोनों पुत्र नकुल और सहदेव, अश्विनी कुमारों का आशीर्वाद माने गए। कुन्ती से पहले उसकी सास सत्यवती ने अपने पुत्र वेदव्यास से अपनी पुत्रवधुओं अम्बिका और अम्बालिका को पुत्रों की प्राप्ति करवाई। जो धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर हुए। कुन्ती के बाद द्रौपदी पाँच-पाँच भाइयों की पत्नी थी। ये सब कथाएँ पढ़कर तब की सामाजिक मर्यादाओं के बारे में क्या धारणाएँ बनाई जाएँ? चूँकि हम महाभारत के आसपास के समय के बारे में टिप्पणी कर रहे हैं, इसलिए हमने उदाहरण भी तब के दिए हैं। अन्यथा अगर आप महाभारत से पीछे के तीन हजार साल तक का समय देखें, तो पीछे मनु के समय तक आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएँगे।

तो क्या मतलब है इसका? सेक्स की दृष्टि से कुण्ठाविहीन होना एक बात है और मर्यादाहीन होना एकदम दूसरा मामला। लगता है कि महाभारत काल में खुलेपन और मर्यादाहीनता में बहुत कम अन्तर रह गया था और इसी का परिणाम था कि तनाव से भरा यह देश महाभारत नामक गृहयुद्ध का शिकार हो गया।

वर्ण के नहीं रहे होंगे। इसके बावजूद हरिद्रुमत ने उसे ब्राह्मण कहा और निस्संकोच अपना शिष्य बनाया तो जाहिर है कि उस बालक की तथा उसकी माँ की सरलता और सत्यवादिता से खासे प्रभावित हो गए थे। तो क्या मान लें कि महाभारत काल तक भी (यानी उसके सौ सवा सौ साल बाद तक भी) वर्ण का निर्धारण जन्म के आधार भी और कर्म के आधार पर भी तय होता था? इतना तो मान ही सकते हैं कि वर्ण का जो निर्धारण कर्म के आधार पर निश्चित किया गया था, उसके जन्म आधारित होने की परम्परा के चल पड़ने के बावजूद कर्म के आधार पर वर्ण तय करने की प्रथा पूरी तरह समाप्त नहीं हुई थी।

पर सत्यकाम जाबाल का उसकी माँ के साथ हुआ सम्वाद और गुरु हरिद्रुमत द्वारा उसके आधार पर सत्यकाम को ब्राह्मण मान लेना, इसमें से उस समय के सामाजिक रिश्तों पर जो रोशनी पड़ रही है, वह काफी अजीब पर नोट करने लायक है। ये रिश्ते काफी खुले थे, सामाजिक अनुशासन को और नैतिकता की मर्यादाओं को भंग करने की हद तक खुले थे, यह सच्चाई इस कथा में से जाहिर हो रही है। कृपया पूरी महाभारत पढ़ जाइए। जिसे हम आजकल की भाषा में 'सेक्स रिलेशन' कहते हैं, उसका हुलिया तब के हमारे समाज में कुछ अजीब किस्म का था। धृताची नाम की एक अप्सरा थी, जिसने भारद्वाज को द्रोण नामक पुत्र दिया था, तो वेदव्यास को शुकदेव नामक पुत्र दिया था। दोनों महापुरुष द्रोणाचार्य और शुकदेव समाज के परम सम्मानित नागरिक थे, वे अपने अपने पिता पुत्र के रूप में ही प्रसिद्ध हुए और उनके जीवन में उनको जन्म देने वाली माँ की यानी धृताची अप्सरा का कोई स्थान कभी नहीं रहा और उसका कोई सामाजिक नुकसान भी द्रोणाचार्य और शुकदेव को नहीं हुआ।

एक और उदाहरण। पराशर मुनि सत्यवती की नौका में बैठकर गंगा पार कर रहे थे। वे नौका में बैठे-बैठे सत्यवती के शरीर के सौन्दर्य और सुगन्ध से इतना मोहित हो गए कि नदी पर तैरती नाव में ही.....

अगर ऐसा है तो हरिद्रुमत गौतम ने क्यों जबाला के सत्यकथन को महत्व दिया और अनेक पुरुषों की सेवा करने वाले उसके शिथिल चरित्र को कोसा नहीं? कारण कुछ भी हो सकता है। पर एक बात साफ है। सत्यकाम जबाला को जिस तरह एक पुत्र के रूप में प्राप्त हुआ, उसमें सत्यकाम का भला क्या दोष था? दोष तो उसकी माँ का था, जिसके बारे में हरिद्रुमत ने कोई टिप्पणी नहीं की। उस गुरु ने तो उस सत्यकाम को शिष्य के रूप में अपनाया, जिसने सारी बात उन्हें सच-सच बता दी और गुरु की निगाह में ब्राह्मण का दर्जा पाया। पर महाभारत काल में सेक्स मार्यादाहीनता की हद तक खुला हो गया था, इसका नमूना सत्यकाम जाबाल की माँ का बयान है, जिसका खामियाजा सत्यकाम को इसलिए नहीं भुगतना पड़ा, क्योंकि एक तो उस वक्त के समाज में ऐसे सत्यकामों की कोई कमी नहीं थी और दूसरे सत्यकाम जाबाल को एक बहुत ही समझदार और सम्वेदनशील गुरु मिला था। इस सब के बीच एक बात तय है। यह कि महाभारत काल के इस खुले सेक्स सम्बन्ध में सिर्फ शारीरिक और सामाजिक जरूरतों को ही पूरा किया जा रहा था और स्त्री-पुरुषों के सम्बन्ध में शारीरिक आकर्षण और भूख ही एकमात्र कारण नजर आती है। जिसे राग, अनुराग या प्रेम कहते हैं, जो स्त्री और पुरुष के साथ सम्बन्धों की बुनियादी शर्त है, उसके दर्शन इन सम्बन्धों में हमें कहीं नहीं होते। जबाला द्वारा स्थापित किए गए सम्बन्धों में भी। यानी मर्यादाहीनता की हदें छू रही थी। तब के समाज की यह मार्यादाहीनता अगर अपनी हदें न छू चुकी होती तो उद्दालक आरुणि के पुत्र श्वेतकेतु को सामाजिक अनुशासन के नए मानदण्ड कायम न करने पड़ते।

(साभार नवभारत टाइम्स)

महेन्द्र नगर में दो दिवसीय साहित्य सम्मेलन

मानसखण्ड लोक संस्कृति पर आधारित आयोजन में जुटे कवि

बनबसा। कंचनपुर, महेन्द्र नगर नेपाल के लिटिल बुद्ध एकेडमी में आयोजित दो दिवसीय साहित्य सम्मेलन का जोरदार समापन हुआ। इसमें उत्तराखण्ड से साहित्यकारों को भी आमंत्रित किया गया था। आयोजन का उद्देश्य दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक और साहित्यिक सम्बन्धों को प्रगाढ़ बनाना था। इस दौरान भारत और नेपाल के सांस्कृतिक और साहित्यिक सम्बन्धों पर परिचर्चा का आयोजन किया गया और एक काव्य गोष्ठी भी आयोजित की गई। दोनों देशों के कवियों ने अपनी रचनाओं को प्रस्तुत किया। इसमें हल्द्वानी डा. मंजू पाण्डे उदिता, अमृता पाण्डे, अल्मोड़ा से महेन्द्र ठकुराठी, कंचन कुमार तिवारी, डा. गोकुल देउपा, मुनस्यारी से प्रवीण प्रकाश और गाजियाबाद से मंजू बिष्ट आदि ने प्रतिभाग किया। इन सभी प्रतिभागियों को भारत नेपाल साहित्य गौरव सम्मान और अन्य साहित्यिक सम्मानों से नवाजा गया। उत्तराखण्ड से पहुँचे साहित्यकारों ने दमदार तरीके से अपनी प्रस्तुतियां रखीं। इस दौरान अमृता पाण्डे ने एक कुमाऊनी और नेपाली गीत प्रस्तुत किया, जिसे श्रोताओं के द्वारा खूब सराहा गया। नेपाल के विभिन्न शहरों से पहुँचे साहित्यकारों की प्रस्तुतियां बहुत शानदार थीं। कार्यक्रम का सबसे आकर्षक नेपाली छात्राओं के द्वारा कुमाऊँनी गीतों में किया गया नृत्य रहा।

नए साल से ऑनलाइन बनेंगे राशन कार्ड

देहरादून। प्रदेश में राशन कार्ड बनवाने की आवेदन प्रक्रिया नए साल से ऑनलाइन हो जाएगी। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री रेखा आर्या ने विभागीय अधिकारियों की बैठक में इस सम्बन्ध में निर्देश दिए। सचिवालय के एफआरडीसी सभागार में आयोजित बैठक में मंत्री ने कहा कि राशन कार्ड बनाने की प्रक्रिया में किसी भी तरह की विसंगति को दूर करने के लिए पूरी प्रक्रिया को ऑनलाइन किया जाए। इसके साथ ही राशन विक्रेताओं के भुगतान और उनकी बिलिंग की प्रक्रिया को भी ऑनलाइन किया जाएगा।

दमुवाढूंगा में मालिकाना हक को सर्वे तेज

हल्द्वानी। सर्वे कानूनगो मिलने के बाद दमुवाढूंगा जवाहर ज्योति में भूमि के मालिकाना हक को लेकर सर्वे में तेजी आई है। शुरुआती चरण में राजस्व गाँव बनाने के लिए दोनों ओर बाउंड्री का चिन्हांकन किया जा रहा है। राज्य सरकार ने इस वर्ष जुलाई में दमुवाढूंगा को राजस्व गाँव बनाने के आदेश दिए थे। इसके बाद जिला प्रशासन ने प्रक्रिया तेज कर दी है। इसके तहत 643 एकड़ भूमि आ रही है। वहीं 40 हजार की आबादी के साथ ही वार्ड 35, 36 और 37 के लोगों को भी फायदा होगा। राजस्व गाँव बनाने का सर्वे नवरात्र में शुरू हुआ था इसमें राजस्व विभाग की ओर से सीमांकन पिलर्स लगा दिए थे। सर्वे कानूनगो के तबादला होने के बाद सर्वे का मामला रुकता दिखने लगा था। जिला प्रशासन को सर्वे कानूनगो मिलने के बाद इस काम में तेजी आई है। अब इसमें वन विभाग देवखड़ी तपोवन से पनियाली तब बाउंड्री बनाकर उत्तरी सीमा का निर्धारण कर रहा है जबकि राजस्व विभाग दक्षिणी सीमा पर चिन्हांकन पर पैमाइश कर रहा है।

उत्तरायणी मेले की तैयारी

हल्द्वानी। पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच की खुली बैठक में उत्तरायणी मेले की तैयारी पर चर्चा हुई और आजीवन सदस्यता पर जोर दिया गया। शान्तिपुरी में भी उत्तरायणी आयोजन को लेकर तैयारी होने लगी है।

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल
लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क
7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड,
दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल
माँ नन्दादेवी
एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न.
8958525979,
9411134775
फोन सम्पर्क-
05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग
मैटीरियल, जनरल आर्डर
सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

नैनीताल जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव मामला

किये-धरे पर कोर्ट ने खूब फटकारा है

ऐसी जीत भी क्या जिसमें बार-बार सुनना और झेलना पड़ रहा है

राज्य सरकार ने जांच जारी होने का हवाला दिया है

नैनीताल। नैनीताल जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में हिंसा के मामले में हाईकोर्ट सीबीसीआईडी की जाँच से सन्तुष्ट नहीं है। अदालत ने इस किये-धरे पर खूब फटकारा है और रेनकोट पर अपहरण करने वालों को अपने सवाल से ढेर कर दिया। न्यायालय की फटकार के बाद इतना तो समझा ही जा सकता है कि ऐसी जीत भी क्या जिसमें बार-बार सुनना और झेलना पड़ रहा है। उस चुनाव की हमेशा चर्चा होगी जिसमें खुलेआम हरकतें हुई थीं और न्यायालय को दखल देना पड़ा है।

मुख्य न्यायाधीश जी.नरेन्द्र एवं न्यायमूर्ति सुभाष उपाध्याय की खण्डपीठ में इस मामले को लेकर सुनवाई हुई। हाईकोर्ट ने इस मामले का स्वत: संज्ञान लेते हुए जनहित याचिका दायर की है। सुनवाई के दौरान जिला पंचायत के पाँच सदस्य खण्डपीठ के समक्ष पेश हुए। साथ ही सीबीसीआईडी की ओर से अभी तक की जाँच रिपोर्ट खण्डपीठ को सौंपी गई। अदालत जांच रिपोर्ट से सन्तुष्ट नजर नहीं आयी। साथ ही अदालत ने पाँचों जिला पंचायत सदस्यों से हिंसा के मामले में सवाल भी पूछे। उन्होंने कहा कि अपहरण नहीं हुआ था और वह अपनी मर्जी से गए थे। उन्होंने स्वेच्छा से मतदान में हिस्सा नहीं लिया। अदालत ने जांच अधिकारी की रिपोर्ट पर कड़ी फटकार लगाते हुए जांच के तरीके पर सवाल उठाए। मामले की जांच एसआईटी से कराने की बात कही।

न्यायालय ने याचिका पर सुनवाई के बाद सुनवाई की अगली तिथि तय कर दी और सरकार से रिपोर्ट पेश करने को कहा है। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से जांच जारी होने का हवाला दिया गया था और रिपोर्ट के लिये समय मांगा गया था, जिसे कोर्ट ने स्वीकार कर लिया। मामले में मुख्य न्यायाधीश जी.नरेन्द्र एवं न्यायूर्ति सुभाष उपाध्याय की खण्डपीलट के समक्ष पांचों जिला पंचायत सदस्य तरुण शर्मा, प्रमोद कोटलिया, डिकर सिंह मेवाड़ी, दीप सिंह बिष्ट, विपिन जन्तवाल कोर्ट में व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहे। सुनवाई में महाधि वक्ता एस.एन. बाबुलकर ने दलील दी कि यह मामला आपराधिक विवाद से सम्बन्धित है इसलिए इस पर जनहित याचिका नहीं चल सकती। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के कई निर्णयों का हवाला दिया। अदालत ने राज्य सरकार को एक सप्ताह का समय देते हुए अगली सुनवाई की तिथि तय की। अब रिपोर्ट आने के बाद मामले की सुनवाई होनी है।

कांग्रेस और भाजपा की नीतियों से जनता परेशान : ऐरी

गंगोलीहाट। उत्तराखण्ड क्रान्तिदल के शीर्ष नेता और पूर्व विधायक काशी सिंह ऐरी ने कहा कि राज्य बनने के बाद भाजपा और कांग्रेस ने बारी-बारी से राज किया। दोनों के राज में आम जनमानस की स्थिति दिन प्रतिदिन खराब होती गई। अब उक्रांद ने राज्य को बचाने का संकल्प लिया है। इसके लिए दल का साथ देना होगा।

उक्रांद के वरिष्ठ नेता काशी सिंह ऐरी दल के सदस्यता अभियान पखवाड़ा शुरू करने के लिए कार्यकर्ताओं के साथ गंगोलीहाट पधारे थे। कार्यकर्ताओं ने नगर में रैली भी निकाली। दशाईथल हेलीपैड पर आयोजित कार्यक्रम में श्री ऐरी ने कहा कि आज राज्य 80 हजार करोड़ रुपये से अधिक के कर्ज में डूबा है लेकिन प्रदेश सरकार की नीतियां आडम्बर के अलावा कुछ नहीं हैं। त्रस्त जनता का रुझान उक्रांद की ओर बढ़ रहा है। इस प्रदेश को संवारने के लिये जनता को अपनी ताकत लगानी होगी। लोग कांग्रेस भाजपा की जन विरोधी नीतियों को समझ उक्रांद की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। इस मौके पर जिलाध्यक्ष चन्द्रशेखर पुनेड़ा, चन्द्रशेखर कापड़ी, जगदीश भण्डारी, राजेन्द्र लाल वर्मा, आदित्य मेहरा, होशियार सिंह, तारा सिंह धानिक, शाहिद सहित अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती वर्ष पर शुभकामनाएं

गंगासिंह पांगती
ग्रामसभा- सिमगड़ी
धरमघर

एन्जिल एकेडमी
कपकोट
(बागेश्वर)
प्रबन्धक- भारत सिंह गड़िया

सुरेन्द्र सिंह पांगती
भूपेन्द्र सिंह पांगती
पुराना बाजार
थल

ललित सिंह जंगपांगी
मल्ला दुम्मर
मुनस्यारी

लक्ष्मण सिंह पांगती
'लछबू'
दरकोट, मुनस्यारी

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)